Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 10, Issue 1 | May 2022 - October 2022 | pp. 103-106

प्राचीन भारतीय इतिहास में पशुचिकित्सीय औषधियों का अध्ययन

चतुरभुज यादव
सहायक आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय सिकन्दरा, दौसा (राजस्थान)

शोध सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय रहा है। हम इतिहास में देखते हैं कि भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक परम्पराएं पशुओं से जुड़ी हुई हैं। मानव ने अपनी आवश्यकतानुसार पशुओं को पालना शुरू किया। तब से ही उसकी देखभाल, स्वास्थ्य प्रबंधन और बीमारी के इलाज का कार्य शुरू किया। जिसका वर्णन हमें सिन्धु सभ्यता काल, वैदिक काल, वेदोत्तर कालीन, मौर्य कालीन, मौर्येत्तर कालीन, गुप्तकालीन युग में अनेक परिवर्तन स्वरूप में देखने को मिलता है। जिसकी जानकारी हमें विभिन्न ग्रंथों से प्राप्त होती है। जिससे पता चलता है कि पशुओं के रोंगों का उपचार औषधिय पौधों तथा जड़ी बूटियों का उपयोग करके किया। मनुष्य का पशुपालन चिकित्सा उद्देश्य पशुओं की उपयोगिता से संबंधित था तथा मानव द्वारा पशु चिकित्सा का गूढ़तम, सूक्ष्म तकनीक का प्रयोग प्राचीन काल से वर्तमान कालीन इतिहास प्ररिपेक्ष्य में देखा जा सकता है।

संकेताक्षर—*पशु चिकित्सा, औषधियां, पशुरोग, पशु चिकित्सा काल*

प्रस्तावना

मानव प्रागैतिहासिक काल में जंगली पशुओं की तरह इधर-उधर भ्रमण करता था तथा पशुओं का मांस-भक्षण कर अपनी उदरपूर्ति करता था। परन्तु जब पानी के स्रोत के पास स्थायी रूप से बसने लगा तो पशुओं को पालतू जानवर के रूप में पालने लगा तथा उसका अपने दैनिक जीवन में सदुपयोग करने लगा तो यह स्वभाविक है कि जब उसने अपनी अस्वस्थता का उपचार ढूंढा तो अपने साहचर्य में रहने वाले पशुओं के स्वास्थ्य की कामना करना भी अपना कर्त्तव्य समझा। इस प्रकार मानव ने जब कृषि कार्य प्रारम्भ किया था तब से मानव ने अपनी आवश्यकतानुसार पशुओं को पालना शुरू किया और उनका उपचार भी मनुष्य ने उनको पालने तथा उपयोगिता के साथ ही शुरू किया। जो सहस्त्राब्धियों पुराना है। अतः यह कहा जा सकता है। पशु चिकित्सा की परम्परा भारत में बहुत पहले विकसित हुई थी।

प्राचीन भारतीय इतिहास पशुओं की देखभाल स्वास्थ्य प्रबंधन और बीमारी इलाज तथा उससे संबंधित औषधियों से भरा पड़ा है। आयुर्वेद के आधार पर भारतीय पशु चिकित्सा अपने विशिष्ट साहित्य के लिए जानी जाती है। जो पशु रोगों की रोकथाम और उपचार के तरीके की जानकारी प्रदान करती है। वेद, पुराण, ब्रह्माण साहित्य, महाकाव्य, चरक, सुक्षत, पलक्प्य, शालिहोत्र आदि प्राचीन रचित साहित्य में पशु देखभाल, स्वास्थ्य प्रबंधन और रोग उपचार के बारे में जानकारी है। जो सिन्धु सभ्यता काल, वैदिक काल, वेदोत्तर कालीन, मौर्य कालीन, मौर्येत्तर कालीन, गुप्त कालीन, गुप्त कालीन युग में अनेक परिवर्तन स्वरूप में देखने को मिलती है। पशु चिकित्सा का प्रमुख आधार जड़ी-बूटियां तथा विभिन्न प्रकार के वृक्ष थे। इसी कारण बहुत सी औषधियों का ज्ञान पशुओं के माध्यम से हुआ। जैसे अश्वगंधा, नाकुल (औषधियां), गजायुर्वेद, गवायुर्वेद ग्रंथ भी पशुओं के महत्तव को सार्थक करते है।

सिन्धु सभ्यता काल से गुप्त काल तक पशु चिकित्सा की औषधियां

प्राचीनकाल के इतिहास में हम देखते है कि मानवीय चिकित्सा हेतु जड़ी-बूटी औषधियों का प्रचलन था, उसी प्रकार से पशु चिकित्सा हेतु भी औषधियों का प्रचलन था।

सिन्धु सभ्यता में पशुचिकित्सीय औषधियाँ—इस काल में हमें पशुओं का विवरण अवश्य रूप से देखने को मिलता है, परन्तु इनकी चिकित्सा पद्धति व उनकी औषधियों के ज्ञान के संदर्भ में हम अनुमानतः जैसे कि शुद्ध हवा, हरे चारागाह, साफ सुथरे पशुओं के निवास स्थल की उस समय की औषधी थी। यह कह सकते है कि जिस प्रकार से औषधियों का ज्ञान वैदिक काल में देखने को मिलता है उससे यह स्पष्ट है कि सिन्धु निवासी भी इस औषधियों से परिचिति रहे हों।

वैदिक काल में पशुचिकित्सीय औषधियाँ—इस काल में अनेक औषधियों का विवरण देखने को मिलता है, यथा—

औषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरूपषु वे।
सनेयमखं गां वास आत्मनं तव पुरुषे।[1]

अर्थात् हे औषधी, तुम माता के समान हो, इसलिये हे देवी। तुमसे प्रार्थना करता हूँ तुमको मैं घोड़ों, गायों तथा अपने लिये औषधी रूप में देता हूँ। इन औषधियों पर अथर्ववेद में प्रकाश डाला गया है।

सहदेवी औषधी—इसको अरूंधती भी कहते हैं तथा इसकी कई किस्म हैं, जिनमें पती, बैंगनी, गुलाबी, पुष्पकी, सहदेवी प्रसिद्ध हैं। इनमें पीतपुण्या अधिक गुणकारी है। इसके सेवन से गाय आदि पशुओं का दूध बढ़ता है। पारस्कर गृह्यसूत्र में इसके मूल का प्रयोग बताया गया है। इसका मूल शीतल, बलकारक और ज्वरनाशक है।[2]

अनुडुदम्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वम् अरूधति।
अधेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे।
(अथर्ववेद,6/59)

अर्थात् गाय, बैल आदि पशुओं को नीरोगी रखती है। गाय आदि का दूध बढ़ाती है, जो गाय दूध नहीं देती है, उसका रोग दूर करके उसे भी दूध वाली बनाती है।

आमंजन मणि औषधि—इसका उल्लेख इस प्रकार है—

परियाणां गवामसि। अश्वानां ..... परिपाणाय तस्थिषे।[3]
(अथर्ववेद, 4.9.2)

अर्थात् इसे गाय, घोड़े आदि पशुओं का रक्षक एवं स्वास्थ्यप्रद बताया है।

औदुम्बर मणि औषधि—इसके बारे में अथर्वेवेद में बताया गया है।

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा।
पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे में सविता करत्।।
(अथर्ववेद, 16.31.1)

अर्थात् औदुम्बर मणि पशुओं को संततिशक्ति देती है और उनका दूध बढ़ाती है। इसका अभिप्राय यह है कि आजंन (अजंन वृक्ष) और उदुम्बर (गूलर) की मणिया माला पशुओं के गले में बांधने से वे स्वस्थ रहते है।[4]

विश्वरूया, सुभगा औरजीवला औषधियाँ—आयुर्वेद के निघण्टु ग्रंथों में विश्वरूप से काला अगर, सुभगा से शालपर्णी और जीवला से सैंहली पिप्पली अर्धभिया गया है। ये औषधियाँ कटु, पाचन शक्ति बढ़ाने वाली कोष्ठशोधक, कृभिनाशक, त्रिदोषनाशक है। अतः पशुओं को नीरोगी रखती है। लंका, सिंगापुर द्वीपों से आने वाली पीपर को सैहली पीपर को सैहली पीपर कहा जाता है। जैसे विश्वख्या सुभगाम अच्छावदमि जीवलाम्।।

अथर्ववेद का पाशु संवर्धन सूक्त इंगित करता है।[5] जड़ी बूटी अरूधति (पर्वतारोही) केवल पशुओं की बीमारी दूर करने में बल्कि गायों में दूध की पैदावार, बांझ, अनुपादक गायों को उत्पादक में बनाने में सहायक थी।

वेदोत्तरकालीन पशु में पशुचिकित्सीय औषधियाँ—इस काल में वेदोत्तरकाल में तेल में अदरक,बाटा, जटामैथी को पकाया जाता था, उसमें सैंधा नमक व शहद को सीगों क जड़ों में लगाया जाये। सेव के पेड़, अपभगरा, धटाकी, पटला, सुज्जा के तनों के बुरादों को जब मसूड़ों पर रगड़ा जाये तो दांतों का दर्द ठीक होता है। बछड़े के बीमार होने पर छाद में पाठा या हल्दी पिलानी चाहिए।[6] परिरक्षक और उपचार के रूप में तेल के विभिन्न उपयोगों का उल्लेख किया गया है। जैसे- फलों के रस, फूलों के अर्क और फलों से बनी मदिरा में महान औषधीय गुण होते हैं। औषधीय जड़ी-बूटियों जैसे अर्जुन (टर्मिनलिया अर्जुन) कुटज (होलरहेना, एंटीडिसेंटरिका), कदंब (एंथोसेफालस कैडम्बा), सरजा (वेटेरिया इंडिका), नीम (अजादिराचता इडिका), अषोक (सरका अशोक), आसन (पैरोकपर्स मार्सुपियम) आदि का व्यापक रूप से पुरुषों और जानवरों की बीमारियों को ठीक करने के लिए उपयोग किया गया था।

मौर्यकालीन पशुचिकित्सीय औषधियाँ—मौर्यकालीन पशु चिकित्सा की औषधियों का प्रचलन था जिसके द्वारा क्षेत्र को

नया आयाम दिया गया। जैसा कि मेगस्थनीज ने बतलाया है, हाथियों के आंत तथा बृणों के रोग हेतु औषधी रूप मे दूध का उपयोग, गरम पानी, कुत्ते का मांस, आसव और घी का प्रयोग करना चाहिए।

अर्थशास्त्र में सूखे भूसे (त्रिना) और हरी घास (यवसा) का पशुओं को स्वास्थ्यवर्धक औषधि के रूप में माना है।[7] अशोक ने पशु चिकित्सालय में पशु रोग निवारण का उल्लेख मिलता है।

मौर्येत्तरकाल में पशुचिकित्सीय औषधियाँ—मौर्येत्तर काल में स्मृतियों और नीतियों में निर्माणात्मक काल में हमें औषधी का विवरण शुक्र की पशु चिकित्सा में देखने को मिलता है।

- मदिरा एवं जंगली मांस का औषधी के रूप में सेवन से घोड़ों के रोग दूर होते है।
- घोड़ों को जलमिश्रित सक्तु खिलायें।
- रास्ते में चलकर आये घोड़े के लिये गुड़ व लावण का औषधी रूप में प्रयोग करना चाहिए।[8]

इसी प्रकार से चरक संहिता में गाय, घोड़ों, ऊँटों, गधों, भेड़-बकरियों के लिये वस्ति द्रव्य के रूप में औषधियों का वर्णन किया है।

हाथियों के लिये बस्तिद्रव्य या औषधियाँ—पीपल, बरगद, अक्षर्णक (बड़ी पत्ती का खासू (साल), खैर, प्रग्रह (अमलतास) शाल की छाल, ताड़ का फल, इन द्रव्यों को समान भाग लेकर इनके विधिवत् बनाये गये क्वाथरस से बनी बस्ति औषधी के रूप में लाभदायक होती है।[9]

गायों के लिये औषधियाँ—मृद्गपर्णी, माषपर्णी, घाय की छाल, साईजन की जड़, पाटला की छाल, महुये की लकड़ी का मध्य भाग, निकुम्भ (दंती) की जड़, चित्रक पलाश की छाल, अजवाइन (भूतिक), देवदारू, रोहणी (कुटकी) इन सब द्रव्य की औषधियों को काम में लेना चाहिए।

घोड़ों के लिए औषधियाँ—पलाश (ढाक) की छाल, दंती की जड़ देदास, सुगन्धितृण, द्रवन्ति की जड़ इन सब औषधियों को घोल तैयार कर पिलाना चाहिये।

ऊँटों, गधों हेतु औषधियाँ—पीलु की पत्तियाँ, करीर की पत्तियाँ, खैर की पत्तियाँ, अमलताश की पत्तियाँ, दशमूल द्रव्यों की पत्तियाँ इनको जौकुट करके प्रयोग में लें।

भेड़, बकरियों हेतु बस्तिद्रव्य (औषधियाँ)—त्रिफला (हरड़ बहेड़ा-आंवला), फालसा, कैथ, बैर, बेल तथा बड़ी बेर इन सबके फलों को समान भाग में औषधि हेतु काम में ले।[10]

गुप्तकालीन पशुचिकित्सीय औषधियाँ—इस काल में पशु चिकित्सा का विकास चरमोत्कर्ष एवं विस्तृत था तथा इस काल में भी औषधियों का वर्णन मिलता है। शालिहोत्र द्वारा लिखे गये अश्वायुर्वेद के आठवें भाग में त्रिफला, हरड़, आर्द्रक, लाक्षा, गुगगुल, सर्षय आदि प्रमुख औषधियों के बारे में बताया गया है।[11] इस तरह से अग्नि पुराण में हाथियों के लिये औषधि-घी व तेल को औषधी के रूप में माना है।[12] घोड़ों के लिए—

- गोबर, नमक, गोमूठ का शरीर पर लंप करें।
- मधु, अडूसा, नीम की छाल, बड़ी कटेरी, गुडूची, औषधी घोड़े के नासिका मल को दूर करते है।
- तिल, मुलहठी, हल्दी और नीम के पत्तों के साथ घी का प्रयोग करने पर घाव भर जाता है।
- खैर, गूलर, पीपल की छाल नेत्र शोधन में सहायक है।
- पीपल, गूलर, पाकड़, मूलहठी, बट और बेल व्रणशोधन में सहायक है।

वर्तमान पशुचिकित्सीय औषधियों की प्रांसगिकता

प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ में हम देखते है कि जिस प्रकार मानवीय महामारी रोगों का उद्भव होता है उसी प्रकार प्रारम्भ से ही महामारी रोगों ने पशुओं को भी काल ग्रास बनाया है। इसका उाहारण वर्तमान में गायों में फैल रहा लम्पी वायरस रोग है। जिससे हजारों गाये काल ग्रास (मृत्यु) बन गयी। इस प्रकार की महामारी हेतु प्राचीन समय में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न औषधियां रोगों को दूर करने में कारगर हो सकती हैं। जैसे पाटला की छाल, रोहणी (कुटकी), साईजन की जड़ आदि को गायों हेतु इस्तेमाल करने से लम्पी जैसे अनेक रोगों को दूर करने में कारगर हो सकती है। इसी तरह से सहदेवी औषधि, औदुम्बर मणि औषधि का प्रयोग पशुओं का दूध बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण है जो वर्तमान पशु दवाइयों में पूर्णतः काम में लिया जा रहा है। तथा पाचन हेतु पशुओं को वर्तमान में चारे के साथ काला (सैंधा नमक) चाटने हेतु रखा जाता है। करकुमा आमदा की जड़ को घाव तथा मोच पर लगाया जाता है। इसी तरह के अनेकों औषधियों का प्रयोग वर्तमान में उपयोग लिया जा सकता है।

ISSN 2348-3857

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि प्राचीन भारतीय इतिहास में मानवीय चिकित्सा हेतु जड़ी-बूटी औषधियों का प्रचलन था। उसी प्रकार पशु चिकित्सा हेतु औषधियों का प्रचलन था, मानव ने पशुओं की उपयोगिता आधार पर ही इनका पालन पोषण एवं चिकित्सा का प्रारम्भ पशुओं की उपयोगिता चिकित्सा के गूढ़तम रहस्य, सूक्ष्मता का पता चलता है। जिसमें पशुओं के रोगों के उपचार हेतु विभिन्न औषधियों का प्रयोग किया जाता था। पशु चिकित्सा में औषधियों का प्रचलन वर्तमान युग में भी देखने को मिलता है। पशु चिकित्सीय औषधियां मानवीय चिकित्सा के समतुल्य स्थान रखती है इस प्रकार हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीय इतिहास में पशुओं की चिकित्सा हेतु वर्णित औषधियों का वर्तमान में भी प्रासांगिकता है।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद, वैदिक शोध संस्थान, पूना 1937-1946
2. द्विवेदी, डॉ. कपिल, वेदों में आयुर्वेद, विश्व भारती परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणासी सत्र 1993, पृ.सं. 195
3. उपर्युक्त, पृ.सं. 195
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 195
5. अथर्ववेद, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1895-1998
6. कोसाइस, हिस्ट्री ऑफ साइंस इन इण्डिया, पृ.सं. 364
7. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, सम्पादक आर.शाम शास्त्री, मैसूर, 1909
8. गौड़, बी.एल., आयुर्वेदतिहास परिचय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणासी, पृ.सं. 146
9. त्रिपाठी, ब्रह्मानंद, चरक सहिता, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणासी, पृ.सं. 1312
10. उपर्युक्त
11. त्रिपाठी, आचार्य शिवप्रसाद, अंग्नि पुराण, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2004, पृ.सं. 626-628
12. उपर्युक्त